शरीर के साथ व्यवस्था — समृद्धि

Human Being मानव	Self (I) मैं	Co-existence सहअस्तित्व	Body शरीर
Need आवश्यकता	**Happiness (e.g. Respect)** सुख (जैस सम्मान)		**Physical Facility (e.g. Food)** सुविधा (जैसे भोजन)
In Time काल में	**Continuous** निरन्तर		**Temporary** सामयिक
In Quantity मात्रा में	**Qualitative (is Feeling)** गुणात्मक (भाव है)		**Quantitative (Limited in Quantity)** मात्रात्मक (सीमित मात्रा में)
Fulfilled By पूर्ति के लिए	**Right Understanding & Right Feeling** सही समझ, सही भाव		**Physico-chemical Things** भौतिक–रासायनिक वस्तु
Activity क्रिया	**Desire, Thought, Expectation…** इच्छा, विचार, आशा…		**Eating, Walking…** खाना, चलना…
In Time काल में	**Continuous** निरन्तर		**Temporary** सामयिक
Type प्रकार	**Knowing, Assuming, Recognising, Fulfilling** जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना		**Recognising, Fulfilling** पहचानना, निर्वाह करना
	Consciousness चैतन्य		**Material** जड़

शरीर में व्यवस्था

मैं	शरीर
	शरीर मैं का साधन है।
चैतन्य	जड़
काल में निरंतर	काल में सामयिक
जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना	पहचानना, निर्वाह करना

सूचना

आदेश →

← संवेदना

शरीर में व्यवस्था

मैं	शरीर
	शरीर मैं का साधन है।
चैतन्य	जड़
काल में निरंतर	काल में सामयिक
जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना	पहचानना, निर्वाह करना
संयम	
शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग की जिम्मेदारी का भाव	

शरीर में व्यवस्था

मैं	शरीर
	शरीर मैं का साधन है।
चैतन्य	जड़
काल में निरंतर	काल में सामयिक
जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना	पहचानना, निर्वाह करना
संयम	स्वास्थ्य
शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग की जिम्मेदारी का भाव	1 शरीर मैं के अनुसार कार्य कर पाता है 2 शरीर के अंग–प्रत्यंग में व्यवस्था बनी रहती है

सूचना

आदेश →

← संवेदना

शरीर में व्यवस्था

मैं	**शरीर** **शरीर मैं का साधन है।**
चैतन्य	जड़
काल में निरंतर	काल में सामयिक
जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना	पहचानना, निर्वाह करना
संयम	**स्वास्थ्य**
शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग की जिम्मेदारी का भाव ↓ आहार ↓ कपड़ा, आवास ↓ साधन	1 शरीर मैं के अनुसार कार्य कर पाता है 2 शरीर के अंग–प्रत्यंग में व्यवस्था बनी रहती है

सूचना

आदेश →

← संवेदना

शरीर में व्यवस्था

मैं	सूचना	**शरीर** **शरीर मैं का साधन है।**
चैतन्य	आदेश → ← संवेदना	जड़
काल में निरंतर		काल में सामयिक
जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना		पहचानना, निर्वाह करना
संयम		**स्वास्थ्य**
शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग की जिम्मेदारी का भाव ↓ ↓ ↓ आहार कपड़ा, आवास साधन ↓ ↓ ↓		1 शरीर मैं के अनुसार कार्य कर पाता है 2 शरीर के अंग–प्रत्यंग में व्यवस्था बनी रहती है
मात्रा में सीमित सीमित सीमित		
सुविधा की आवश्यकता सीमित मात्रा में है		

Prosperity (समृद्धि)

Prosperity – The feeling of **having more** than **required Physical Facility**

2 1

समृद्धि – **आवश्यक सुविधा** से **अधिक की उपलब्धि / उत्पादन** का भाव

1 2

1 – Identification of **required physical facility** (including the required quantity)
– with right understanding

आवश्यक सुविधा का निर्धारण – सही समझ से

2 – Ensuring **availability/ production of more** than required physical facility
– with right skills

अधिक की उपलब्धि / उत्पादन, भौतिक रासायनिक वस्तुओं का – सही हुनर से

A prosperous person thinks of right utilisation, nurturing the other
" deprived " " " accumulation, exploiting " "

समृद्ध व्यक्ति सदुपयोग का, दूसरे का पोषण करने का सोचता है
दरिद्र " संग्रह " " " शोषण " " " "

FAQ – क्यों "आवश्यकता से अधिक सुविधा "

- आवश्यक सुविधा की पहचान (निश्चित मात्रा में) – समझ से
- आवश्यकता से अधिक सुविधा की उत्पादनपूर्वक सुनिश्चितता– श्रमपूर्वक आवर्तनशील विधि से
- उपलब्ध सुविधा का सदुपयोग– संयम के भाव से
- अतिरिक्त सुविधा का वितरण
  - परस्पर पूरकता के अर्थ में
  - व्यवस्था के अर्थ में

समृद्धि

समृद्धि– **आवश्यक सुविधा** से **अधिक की उपलब्धि / उत्पादन** का भाव

1 2

1– **आवश्यक सुविधा** का निर्धारण – समझ से

2– **अधिक की उपलब्धि / उत्पादन** (भौतिक–रासायनिक वस्तु का) – हुनर से

समृद्ध व्यक्ति सदुपयोग, दूसरे का पोषण करने की सोचता है

दरिद्र " संग्रह, " " शोषण " " " "

We can observe two categories of human beings

इसीलिए अभी दो तरह के मनुष्य दिखाई देते हैं–

1. Lacking physical facility, unhappy deprived (*सुविधा विहीन दुखी दरिद्र*)
2. Having physical facility, unhappy deprived (*सुविधा संपन्न दुखी दरिद*)

While we want to be – *जबकि हम होना चाहते हैं–*

3. Having physical facility, happy prosperous (*सुविधा संपन्न सुखी समृद्ध*)

Check within yourself

- Where are you now – at 1, 2 or 3 and
- Where do you want to be?

अपने में जांच कर देखें–

- *अभी हम कहां है?– 1, 2 या 3 में और*
- *कहां होना चाहते हैं?*

समृद्धि

समृद्धि– **आवश्यक सुविधा** से **अधिक की उपलब्धि/संभावना उत्पादन** का भाव

1 2

1– आवश्यक सुविधा की पहचान – समझ से

2– आवश्यकता से अधिक सुविधा की उत्पादनपूर्वक सुनिश्चितता – श्रमपूर्वक

पहचान

समृद्ध व्यक्ति सदुपयोग, दूसरे का पोषण करने की सोचता है

दरिद्र व्यक्ति संग्रह, दूसरे का शोषण करने की सोचता है

जाँचे :

1. क्या आपने अपने लिए आवश्यक सुविधाओं की पहचान कर ली है?
2. क्या आपके पास आवश्यकता से अधिक सुविधा है?
3. क्या आप निरंतर समृद्धि का भाव महसूस करते हैं?
4. आप सुविधा के सदुपयोग की सोचते हैं या संग्रह की?
5. आप दूसरे मनुष्य के पोषण की सोचते हैं या शोषण की?

सारांश

मानव मैं और शरीर के सह–अस्तित्व के रूप में है।

शरीर मैं का साधन है।

शरीर एवं मैं के बीच सिर्फ सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है।

मैं में संयम का भाव एवं शरीर में स्वास्थ्य, यही इन दोनों के बीच व्यवस्था का स्वरूप है।

- **संयम**=शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग की जिम्मेदारी का भाव
- **स्वास्थ्य=** शरीर मैं के अनुसार कार्य कर पाता है एवं शरीर के अंग–प्रत्यंग में व्यवस्था बनी रहती है

शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग के लिए सुविधा की आवश्यकता सीमित मात्रा में है।

समृद्धि– **आवश्यक सुविधा** से **अधिक की उपलब्धि/ संभावना** का भाव

1 2

1– **आवश्यक सुविधा** की पहचान – समझ से

2– आवश्यकता से अधिक सुविधा की उत्पादनपूर्वक सुनिश्चितता – हुनर से